eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

वर्तमान परिदृश्य में बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता

नीता सोनकर[1]
[1]असिस्टेट प्रोफेसर– इतिहास, डॉ0 अम्बेडकर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ऊँचाहार–रायबरेली

Received: 29 June 2025 Accepted & Reviewed: 29 June 2025, Published: 30 June 2025

Abstract

ईसाई धर्म और इस्लाम धर्म के पश्चात् तीसरे सबसे बड़े धर्म के रूप में प्रतिस्थापित बौद्ध धर्म शांति, अहिंसा, करूणा, मानवता, विश्वबन्धुत्व और लोककल्याण की भावना से अभिप्रेरित आध्यात्मिक दर्शन और सिद्धांत है। महान विभूति गौतम बुद्ध जो कि आगे चलकर 'महात्मा बुद्ध' के नाम से प्रसिद्ध हुए, ने अपने आदर्शों सिद्धांतों और जीवन दर्शन से सम्पूर्ण मानव जाति को एक नवीन जीवन ज्योति प्रदान किया।

बौद्ध धर्म महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं पर आधारित है जो कि मानवता के लिए एक उज्जवल प्रकाश के समान है। बौद्ध धर्म दुःख, दुःख के कारण और दुःख निवारण के लिए मार्गदर्शन तथा सरल साधानात्मक उपाय प्रस्तुत करने के साथ ही वर्तमान ज्वलंत समस्याओं और चुनौतियों का सकारात्मक समाधान प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बौद्ध धर्म की विशेषता है कि यह ध्यान, तपस्या, सद्विचार, संयम, अहिंसा, समानता, समरसता को आधारभूत अंग मानता है। वर्तमान वैज्ञानिक युग में महात्मा बुद्ध का जीवन दर्शन और बौद्ध धर्म के सिद्धांत मानवीय सचेतनता और विश्व कल्याण के साथ ही आध्यात्मिक उन्नति, शुद्ध चित्त, विकार मुक्त वातावरण एवं आदर्श जीवन पद्धति प्रस्तुत करने के कारण वर्तमान समय में अधिक प्रासंगिक है।

शब्द कुंजी – पुनर्जागरण, आध्यात्मिक चेतना, आत्मसत्य, आत्मज्ञान, सचेतनता, मध्यम मार्ग

Introduction

विश्व में कुछ ऐसे महापुरूष हुए हैं जिन्होंने अपने आत्मज्ञान और आध्यात्मिक चेतना से मानव सभ्यता को एक नई दिशा दिखाई। उन्हीं में से एक महान विभूति गौतम बुद्ध थे जो कि आगे चलकर महात्मा बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुए। विश्व को अपने दृष्टिकोण से एक नवीन 'मध्यम मार्ग' दिखाने वाले महात्मा बुद्ध, भारत के महान बौद्ध धर्म के संस्थापक, समाज सुधारक तथा पुनर्जागरण के अग्रदूत थे। दक्षिणी नेपाल के लुम्बिनी में शाही परिवार में जन्में सिद्धार्थ का प्रारम्भिक जीवन राजसी वैभव का प्रतीक था किन्तु मानव जीवन की पीड़ा, नश्वरता और अस्तित्व सम्बन्धी असन्तोष उन्हें एक ऐसी यात्रा की ओर ले गया जिसने मानवता, आध्यात्मिकता और विश्वशान्ति को एक नई दिशा दी। राजमहल परित्याग के पश्चात् वे आत्मज्ञान की खोज में निकल पड़े। कठोर साधना और तपस्या के पश्चात् सिद्धार्थ ने आत्मसत्य और आत्मज्ञान की प्राप्ति की और वे महात्मा बुद्ध कहलाए। उनकी आत्मजागृति ने मानव जाति को एक नवीन दर्शन प्रदान किया जो कि 'चार आर्य सत्य' और आष्टांगिक मार्गों पर केन्द्रित थी। महात्मा बुद्ध की शिक्षाएं वर्तमान में बौद्ध दर्शन के नाम से विश्व में प्रसिद्ध हैं।

बौद्ध दर्शन, सत्य, शांति, अहिंसा, बन्धुत्व, मानवता तथा विश्वकल्याण की भावना से अभिप्रेरित दर्शन है। बौद्ध दर्शन ऐसे मानवीय सद्गुणों का संग्रह है जो कि वस्तुओं को उसके वास्तविक स्वरूप में पहचाननें तथा चित्त व इन्द्रियों को संयमित करने में सहायता प्रदान करता है। बौद्ध दर्शन में चार आर्य –सत्य, अष्टांगिक मार्ग, मध्यम मार्ग, प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धांत, पंचशील सिद्धांत, अनात्मवाद, अनीश्वरवाद, क्षणिकवाद जैसे गुढ़ विषयों पर वृहद वर्णन प्राप्त होता है। बौद्ध दर्शन जहाँ हमें संसारिक दुःख का कारण बताता है तो वहीं वह मानव कल्याण हेतु उसके निवारण का मार्ग भी दिखाता है।

महात्मा बुद्ध ने मानव जीवन की पीड़ा को समझने और उससे मुक्ति पाने के लिए चार आर्य सत्य का प्रतिपादन किया, जोकि बौद्ध दर्शन का मूल आधार है। उन्होंने दुःख से निवृत्ति के लिए अष्टांगिक मार्ग को एक व्यावहारिक और संतुलित जीवन पथ के रूप में प्रस्तुत किया, जो कि निम्न प्रकार से है :–

- सम्यक दृष्टि – वस्तु को उसके वास्तविक स्वरूप में ध्यान करना।
- सम्यक संकल्प – राग–द्वेष से मुक्त अहिंसात्मक विचार रखना।
- सम्यक वाक् – अपने वचनों पर नियन्त्रण (प्रिय वचन बोले)।
- सम्यक कर्मान्त – सद्मार्गो का अनुसरण।
- सम्यक आजीव – सदाचारपूर्ण जीवकोपार्जन करना।
- सम्यक व्यायाम – शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक उन्नति हेतु प्रयत्नशील रहना।
- सम्यक स्मृति – मिथ्या धारणाओं का त्याग करना।
- सम्यक समाधि – मन एवं चित्त की एकाग्रता से निर्वाण प्राप्त करना।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व के भारत में व्याप्त सामाजिक, धार्मिक और नैतिक अव्यवस्थाओं के संदर्भ में महात्मा बुद्ध ने जीवन की दोनों अतिशय अवस्थाओं – इंद्रिय भोग और कठोर तप, का परित्याग कर 'मध्यम मार्ग' का प्रतिपादन किया। यह मार्ग न केवल आत्मानुशासन का प्रतीक था, अपितु उसने सम्यक दृ ष्टि, समता, करुणा और आत्मविकास का आधार प्रस्तुत किया। महात्मा बुद्ध का यह उपदेश मानव जाति के लिए एक सार्वकालिक मार्गदर्शक सिद्ध हुआ, जो मोह–माया, आकर्षणों तथा भौतिक आसक्ति से मुक्ति का संदेश देता है। वर्तमान समय में जब भारत सहित सम्पूर्ण विश्व वर्गभेद, सांप्रदायिकता, सामाजिक विषमता तथा वैचारिक संकीर्णताओं से जूझ रहा है, तब बुद्ध का यह मध्यम मार्ग और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। यह केवल आत्मकल्याण का ही नहीं, अपितु सामाजिक समरसता, सह–अस्तित्व और वैश्विक शांति की स्थापना का भी मार्ग है।

प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत महात्मा बुद्ध की समस्त शिक्षाओं तथा उपदेशों का आधार स्तम्भ है। जिसका अर्थ है कि इस जगत में समस्त वस्तुएं एक–दूसरे पर आश्रित तथा परनिर्भर हैं, जो किसी न किसी कारण से इस सृष्टि में जन्म लेती हैं। प्रतीत्यसमुत्पाद ही सृष्टि है और यही निर्वाण है। रिजडेविड्स के अनुसार ''निर्वाण मन की पापहीन शांत अवस्था के समान है और उसे पवित्र, शांत, शिवत्व तथा प्रज्ञा कहा जा सकता है।'' बौद्ध धर्म के अनुसार निर्वाण का तात्पर्य मोक्ष की प्राप्ति नहीं है बल्कि मानव इस निर्वाण को अपने जीवन काल में भी प्राप्त कर सकता है। शुद्ध तथा शांत चित्त, इन्द्रिय संयम, वासना रहित जीवन ही निर्वाण है। महात्मा बुद्ध के द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत तथा आदर्श वर्तमान वैज्ञानिक युग में भी अपनी उपदेयता बनाये हुए है।

महात्मा बुद्ध के द्वारा उपदेशित पंचशील सिद्धांत मानव जगत को जीवन जीने का सहज, सरल दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। पंचशील सिद्धांतों का अनुपालन प्रत्येक धर्म के अनुयायी कर सकते हैं क्योंकि ये सिद्धांत जीवन जीने का एक सदाचारी आचरण है। ये सिद्धांत हैं – सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्यचर्य व मद्यनिषेध। सम्यक वाक, सम्यक कर्मान्त एवं सम्यक आजीव शील कहे गये हैं तथा सम्यक स्मृति, सम्यक समाधि व सम्यक व्यायाम को समाधि कहा गया है। बौद्ध दर्शन में इन पाँच शील की व्यवस्था आम जनों के लिए की गई थी ताकि मनुष्य अपने विचारों एवं कर्मों का विश्लेषण कर उसे नियंत्रित करके सद्मार्ग पर उन्मुख हो सके। वर्तमान में मानव भौतिकता, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की ओर अग्रसर है। भौतिक तथा यंत्रिकी समृद्धि के साथ–साथ वह, हिंसा, भेदभाव, धार्मिक उन्माद, पारस्परिक कलह तथा स्वार्थ से भी घिरता जा रहा है। ऐसे में मानव जगत में सद्विचारों का प्रवाह तथा बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता अत्यधिक बढ़ जाती है। बौद्ध दर्शन यथार्थ, सार्थक तथा वास्तविक जीवन जीने की प्रेरणा प्रस्तुत करता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

बौद्ध दर्शन अनात्मवादी तथा अनीश्वरवादी दर्शन है। आत्मा की अमरता के सिद्धांत को स्वीकार न करते हुए वे पुनर्जन्म तथा कर्म के सिद्धांत को मान्यता प्रदान करते हैं। उनका मानना था कि जीवन विभिन्न अवस्थाओं की चलने वाली एक सतत प्रक्रिया है जो कि एक–दूसरे पर निर्भर होती है तथा शरीर के समाप्त हो जाने पर आत्मा भी समाप्त हो जाती है। आत्मा की नित्यता, अजरता, अमरता तथा ईश्वर की सत्ता में विश्वास न करने के अर्थों में ही बौद्ध दर्शन अनीश्वरवादी पक्ष की ओर दृढ़ होकर मानव जाति को ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना को साकार स्वरूप प्रदान करने का सद्मार्ग दिखाता है।

बौद्ध धर्म तथा दर्शन की आधारशिला शान्ति और अहिंसा का सिद्धान्त है। महात्मा बुद्ध के उपदेशों का सार है– किसी को भी कष्ट दिए बिना उसे दया, शान्ति, सचेतनता और करूणा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करना। बुद्धत्व प्राप्ति के बाद उन्होंने मध्यम मार्ग का अनुसरण करते हुए संसार को दुःखों से मुक्ति का जो मार्ग बताया वह अनुकरणीय था। गौतम बुद्ध ने जिस संघ का निर्माण किया था, उनके महापरिनिर्वाण से पूर्व उसने एक विशाल संघ का रूप ले लिया। जिसमें बौद्ध धर्म में दीक्षित होने वाला व्यक्ति तीन वाक्यों का उच्चारण करके दीक्षा प्राप्त करता था–

बुद्धं शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि, संघं, शरणं गच्छामि

बुद्धं शरणं गच्छामि का अर्थ है– ज्ञान की शरण में जाना अर्थात् जब हमारे अन्तर्मन में प्रकाश हो जाएगा तब हमें अच्छे–बुरे, सही–गलत की पहचान स्वतः होने लगेगी।

धम्मं शरणं गच्छामि का अर्थ है– प्रकृति के नियमानुसार चलना अर्थात् जब हम प्रकृति के नियमों के तहत चलते हैं तब हमसे गलत कार्य होना स्वाभाविक रूप से बन्द हो जाता है। नियमों को पहचानने पर ज्ञान के द्वार खुल जाते हैं और भटकाव बन्द हो जाता है।

संघ शरणं गच्छामि का अर्थ है –कि मैं संघ की शरण में जाता हूँ अर्थात् जो भिक्षु ज्ञान की खोज में संघ की शरण में आते हैं वो प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए निर्वाण को प्राप्त कर रहे हैं, मैं उनकी शरण को ग्रहण करता हूँ।

अहिंसा परमो धर्मः अर्थात् सृष्टि में अहिंसा से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। अहिंसा का तात्पर्य है कि केवल मानव मात्र से ही नहीं बल्कि पेड़–पौधे तथा किसी भी जीवधारी को मन, वचन व कर्म से दुःख न पहुँचाना है। महात्मा बुद्ध का एक महत्वपूर्ण विचार था ''आत्म दीपो भवः'' अर्थात् अपना दीपक स्वयं बनो। इस विचार का मूल अर्थ यह है कि व्यक्ति को उचित–अनुचित, नैतिक अनैतिक प्रश्नों का फैसला स्वयं करना चाहिए।

बौद्ध मनोविज्ञान के अनुसार मानव का सम्पूर्ण आचरण उसकी चित्तवृत्तियों और मानसिक प्रवृत्तियों का प्रतिफल होता है। महात्मा बुद्ध का यह सिद्धांत कि 'चित्तं एव हितेन नीयते' अर्थात मन ही समस्त शुभ और अशुभ कर्मों की जड़ है जो इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि यदि मन शुद्ध और संतुलित है तो व्यवहार भी करुणामय और अहिंसात्मक होगा। वर्तमान समय में जब विश्व हिंसा, वैमनस्य और सामाजिक असमानता की ओर अग्रसर हो रहा है, तब यह और भी आवश्यक हो जाता है कि मानव अपने चित्त को सकारात्मक, करुणामूलक एवं सम्यक विचारों से अनुप्राणित करे। बुद्ध के अनुसार चित्त की शुद्धि से ही समाज में समरसता, शांति और नैतिक संतुलन संभव है। अतः मानसिक अनुशासन और सतत आत्मनिरीक्षण ही मानवता को विनाश से बचाने का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। ऐसे में बौद्ध धर्म के दया, करूणा, धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक समानता के सिद्धांतों को अंगीकृत करना एवं वर्तमान में ज्वलंत समस्याओं से जूझती हुई मानवता के लिए बुद्ध के सिद्धांत सर्वाधिक प्रासंगिक हैं।

निष्कर्ष– महात्मा बुद्ध के सिद्धांत तथा उपदेश सर्वकालिक तथा सार्वभौमिक हैं। वर्तमान परिपेक्ष्य में महात्मा बुद्ध द्वारा बताए गए नैतिकता, शांति, सद्भाव, समरसता और करूणा का मार्ग कठिन हो सकता है किंतु

असाध्य नहीं। आत्म चेतना और मानव कल्याण का बौद्ध दर्शन वर्तमान वैज्ञानिक युग की समकालीन समस्याओं के निवारण हेतु मार्गदर्शन का कालातीत स्रोत बना हुआ है। आधुनिक युग की जटिलताओं में हम जिस प्रकार से संघर्षरत है, बौद्ध धर्म, दर्शन और सिद्धांतों की प्रासंगिकता बढ़ जाती है जो हमें यह स्मरण कराती है कि आत्मिक शांति और मानव कल्याण एक ही सिक्के के दो पहलू है जो हमें स्थाई स्थायी शांति, सद्भाव, एकता, समानता का भाव प्रदान करती है और इसी भाव से ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावना को साकार स्वरूप दिया जा सकता है ।

आज भारत सहित विश्व के देशों में धार्मिक उन्माद तथा संघर्ष का जो वातावरण दिखाई दे रहा है वह निश्चय ही गम्भीर चिंता का विषय है। धार्मिक संघर्ष का एक मुख्य कारण विज्ञानवादी युग में वैज्ञानिक संसाधनों तथा तकनीकी के द्वारा धर्म को दी जा रही चुनौतियां भी है। बौद्ध दर्शन प्रगतिशील व परिवर्तनशील होने के कारण अधिक प्रांसगिक हो जाता है। महात्मा बुद्ध ने समाज में व्याप्त असमानता, भेदभाव तथा संघर्ष को समाप्त करने के लिए स्वतन्त्रता, समानता तथा बन्धुत्व की भावना को जन्म दिया। डॉ0 भीमराव अम्बेडकर का कथन था कि ''मैंने स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व के विचारों के अनुसरण आधुनिक फ्रांस की क्रान्ति से नहीं बल्कि महात्मा बुद्ध के दर्शन से ग्रहण किया है।''
यदि आज भी समस्त विश्व बौद्ध दर्शन के सिद्धांतों और आदर्शों को अपनाए, तो निश्चित रूप से विश्व में शांति, समानता, सौहार्द तथा भाईचारे की भावना को स्थापित किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. राधाकृष्णन डॉ0 सर्वपल्ली : हिन्दू दर्शन, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली
2. उपाध्याय, प्रोफेसर जगन्नाथः भगवान बुद्ध, बौद्ध धर्म और उनका दर्शन, सम्यक प्रकाशन
3. सांकृत्यायन आचार्य राहुलः बौद्ध दर्शन, साकेत प्रकाशन, महाराष्ट्र(दिल्ली)
4. आंबेडकर, डॉ0 बाबासाहबः भगवान बुद्ध और उनका धम्म, एसोसिएशन फॉर एजुकेशन, जापान, डिजिटल पब्लिकेशन
5. रिजडेविडस, बुद्धिज्म, पृ०–111–112
6. श्रीवास्तव, के0 सी0ः प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद।
7. मिश्र, जयशंकरः प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास,बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना
8. प्रसाद, ईश्वरी, मिश्र, शैलेन्द्रः प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला, राजनीति धर्म तथा दर्शन, मीनू पब्लिकेशन, इलाहाबाद
9. लाल, डा0 अँगनेः बौद्ध संस्कृति के विविध आयाम, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ
10. भारती, अमिताभ :बौद्ध धर्म और अध्ययन,नमन प्रकाशन, भारतीय बौद्ध संस्थान
11. शर्मा, कमल कान्त : www.allresearchonjournal.com,रिसर्च जनरल 23/06/2017
12- राज, मोनिकाः बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता, जनसत्ता, मई 26, 2021, **http://www.jansatta.com**
13. बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता, मई 5, 2023, http://panchjanya.com
14. सुखमय जीवन की खोज है बौद्ध दर्शन, मई 09, 2022 http://www.jagaran.com
15. वर्तमान में बुद्ध की शिक्षाओं की प्रासंगिकता http://pwonyias.com
16. पासवान, डॉ0 जवाहरः, बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता, जनवरी 10, 2025, http://samajjaran.in